राज्य अध्याय 4

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर की उपस्थिति के विषय में जागरूकता के लिए, उसकी आवाज सुनने के लिए और उसके आत्मा के माध्यम से परमेश्वर द्वारा मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना करें।*** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश करने के विषय में इस पाठ को प्रभु के लिए प्रतिबद्ध करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) ***(शांत समय)*** **निर्गमन 18, 20, 32, 33**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** ***(या*** अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (निर्गमन अध्याय 18, 20, 32, 33) से शान्त समय में क्या सीखा है।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें और लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) ***(परमेश्वर का राज्य)*** **(4) लूका 9:62**

दो–दो करकर ***समीक्षा करें।***

(4) राज्य में सेवा करते हुए कभी पीछे न देखें। लूका 9:62। जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं।

4	**बाइबल अध्यनन** (85 मिनट) ***(रोमियों के नाम पत्री)*** **रोमियों 1:18–32**

परिचय दें। **रोमियों 1:18–32** का एक साथ अध्यनन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें।

रोमियों 1:1–17 में पौलुस ने सुसमाचार प्रस्तुत किया। लोगों को बचाने के लिए सुसमाचार परमेश्वर का शक्तिशाली साधन है। यह परमेश्वर का अच्छा समाचार है कि वह मसीह पर विश्वास करने वाले प्रत्येक व्यक्ति पर मसीह की धार्मिकता अभ्यारोपित करता है (सम्मिलित करना, सम्बंधित करना)।

रोमियों 1:18–32 में, पौलुस का उद्देश्य शिक्षा को साबित करना है कि "धार्मिकता केवल विश्वास द्वारा (अभ्यारोपित) होती है और (धार्मिक या अच्छे) व्यवस्था कामों के द्वारा नहीं।" ऐसा करने के लिए पहले यह दिखाना जरूरी था कि किसी भी व्यक्ति के पास आवश्यक धार्मिकता नहीं होती है जिसकी परमेश्वर माँग करता है (जो उसे बचाएगी)। और क्योंकि सभी लोग अपनी किसी भी स्वयं धार्मिकता के बिना हैं, वे परमेश्वर के दोष और विनाश के प्रति अनावृत हैं। वह रोमियों 1:18–32 में अन्यजातियों के संदर्भ में और रोमियों 2:1 से 3:8 में यहूदियों के संदर्भ में ऐसा करता है।

चरण 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइए एक साथ पढ़े रोमियों 1:18-32।

आइए हम बारी-बारी एक-एक पद तब तक पढ़ें, जब तक कि हम पढ़ना पूरा न कर लें।

चरण 2. खोज **अवलोकन**

विचार करें। इस पद में आपके लिए कौन-सा सत्य महत्वपूर्ण है?

या इस पद में से कौनसा सत्य आपके दिमाग या दिल को छूता है?

अभिलेखित करें। एक या दो सत्यों की खोज करें जिन्हें आप समझते हैं। उनके विषय में सोचें और अपने विचारों को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्यों को सोचने और लिखने के लिए लगभग दो मिनट का समय मिल गया हो, तब साझा करने के लिए बारियाँ लें)।

आइए हम एक दूसरे के साथ साझा करने के लिए बारियाँ लें, जो कुछ भी हमने खोजा है।

(स्मरण रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग-अलग चीजें साझा करेंगे)

1:18-23

खोज 1. **ईश्वरविहीन चरित्र के परिणाम।**

परमेश्वर अपने अलौकिक अस्तित्व, चरित्र और व्यवहार में पवित्र और धर्मी है। इसलिए परमेश्वर पूर्ण रीति से न्यायपूर्ण और निष्पक्ष होता है जब वह ऐसे लोगों को दोषी ठहराता है जो चरित्र में अपवित्र और व्यवहार में अधर्मी होते हैं। एक व्यक्ति जिसे ईश्वरविहीन या दुष्ट होने के लिए आरोपित किया जा सके, उसे न्यायपूर्वक परमेश्व के धर्मी आक्रोश के प्रति अनावृत किया जाता है। वह अपने मानव वंश, अपने स्वयं के चरित्र या धार्मिक मान्यता और व्यवहार के आधार पर परमेश्वर के प्रेम और अनुग्रह का दावा नहीं कर सकता है!

रोमियों 1:18-32 में पौलुस सबसे पहले यह साबित करता है कि अन्यजाति पूर्ण रीति से अधर्मी हैं। वास्तव में, वे ईश्वरविहीन और दुष्ट हैं (रोमियों 1:18)। इसलिए, यदि गैर-मसीही बचना चाहते हैं, तो उन्हें बाइबल के परमेश्वर की धार्मिकता की आवश्यकता होगी। परमेश्वर की धार्मिकता के बिना, लोग निश्चित रूप से नष्ट हो जाएंगे! रोमियों 1:18-23 में पौलुस अन्यजातियों के *ईश्वरविहीन चरित्र* का वर्णन करता है और रोमियों 1:24-32 में वह उनके *दुष्ट व्यवहार* का वर्णन करता है।

परमेश्वर ने अपने अलौकिक अस्तित्व, चरित्र और शक्तिशाली आचरण को स्पष्ट रूप से सृष्टि में अपने कार्यों के माध्यम से प्रकट किया है। अन्यजाती हमेशा परमेश्वर के अलौकिक अस्तित्व, चरित्र और कर्मों के विषय में पर्याप्त जानकारी प्राप्त करने में सक्षम हुए हैं। वे हमेशा यह जानने में सक्षम हुए हैं कि एक अलौकिक अस्तित्व है और यह कि वह अति शक्तिशाली है। इसलिए अन्यजातियों का ईश्वरविहीन चरित्र और दुष्ट व्यवहार पूर्ण रीति से अक्षम्य है (रोमियों 1:19-20)!

हालाँकि अन्यजातियों के पास परमेश्वर को जानने का अवसर है, वे परमेश्वर की उपासना या सेवा नहीं करते हैं। इसके बजाय वे न केवल जीवित परमेश्वर के विषय में *सच्चाई को दबाते हैं* (रोमियों 1:18), बल्कि अपने स्वयं के आविष्कृत झूठ (दार्शनिक, धार्मिक और तथाकथित वैज्ञानिक झूठ) के लिए जीवित परमेश्वर के विषय में *सच्चाई का भी आदान-प्रदान करते हैं* (रोमियों 1:25)! परिणामस्वरूप, वे स्वयं को सभी प्रकार की मूर्तिपूजा के लिए देते हैं ("मूर्तिपूजा" बाइबल के परमेश्वर की बजाय किसी

अन्य "देवता" की उपासना करना है)! अशिक्षित अन्यजाती पत्थर की मूर्तियाँ बनाते हैं। वे अविनाशी परमेश्वर की महिमा के साथ नाशमान मनुष्य और जानवरों की छवियों का आदान-प्रदान करते हैं (रोमियों 1:21-23)। परन्तु शिक्षित अन्यजाती "परमेश्वर के विषय में अपने विचार, अपने स्वयं के धर्म और अपनी धार्मिक पुस्तक" का आविष्कार करते हैं। वे अपने स्वयं की (पापी) समानता में "एक ईश्वर" का निर्माण करते हैं, क्योंकि तब वे अपने चरित्र या दुष्ट व्यवहार को बदलने की आवश्यकता के बिना अपने ईश्वर की उपासना कर सकते हैं![1] हालांकि, यदि कोई भी जीवित परमेश्वर, बाइबल के परमेश्वर की उपासना करने की इच्छा रखता है, तो उसके स्वभाव, चरित्र और व्यवहार को बदलना होगा! तब उसे परिवर्तित होना होगा! तब उसे नया जन्म लेना होगा! यीशु कहता है, "अचम्भा न कर, कि मैं ने तुझ से कहाय कि तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है" (यूहन्ना 3:7)!

एक ईश्वरविहीन चरित्र के परिणाम भयानक हैं! अपने दिमाग से जो कुछ भी वे सोचते हैं वह व्यर्थ हो जाता है, परमेश्वर की दृष्टि में बिल्कुल बेकार। और उनके हृदय से जो कुछ भी निकलता है वह केवल अंधकार है (रोमियों 1:21)। "उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है सो निरन्तर बुरा ही होता है" (उत्पत्ति 6:5)। "उनके हृदय से केवल बुरे विचार निकलते हैं" (मत्ती 15:19)। अन्यजाती दिखाते हैं कि उनके भीतरी मनुष्यत्व और उनके धर्म में वे अंधकारमय हो गए हैं और बाइबल के पवित्र और धर्मी परमेश्वर की आराधना करने में सक्षम नहीं हैं और बाइबल के परमेश्वर की दृष्टि में जो सही है वह करने में भी सक्षम नहीं हैं!

1:24-32

खोज 2. **दुष्ट व्यवहार के परिणाम।**

पौलुस अन्यजातियों के दुष्ट व्यवहार और उसके भयानक परिणामों का वर्णन करता है। अन्यजाती परमेश्वर के ज्ञान को बनाए रखना सार्थक नहीं समझते, जो वे या तो परमेश्वर की सृष्टि के कार्यों में से या परमेश्वर के नैतिक नियमों में से प्राप्त करते हैं, जो उनके हृदयों पर लिखे गए हैं (रोमियों 1:19-20,28; 2:14-15)। वे न केवल हर प्रकार की दुष्टता को स्वयं *करना* जारी रखते हैं, परन्तु दूसरों के द्वारा की जाने वाली हर प्रकार की दुष्टता को भी *अनुमोदित* करते हैं (रोमियों 1:32)।

एक दुष्ट व्यवहार के परिणाम भयानक हैं! परमेश्वर दुष्ट लोगों को उनकी अपनी ही दुष्टता को सौंप देता है! वे ठीक वही काटते हैं जो वे बोते हैं (गलतियों 6:7)! वे कामोद्दीपक जैसी पापी इच्छाओं को बढ़ावा देते हैं और सभी प्रकार के अनैतिक यौन कार्य करते हैं। इसलिए परमेश्वर *उन्हें* शर्मनाक कामोद्दीपक और अपमानजनक यौन अनैतिकता के जीवन को *सौंप देता है* (रोमियों 1:24)। वह उन्हें शर्मनाक और घृणित वासनाओं (रोमियों 1:26) और भ्रष्ट दिमाग (रोमियों 1:28) को सौंप देता है। परमेश्वर उन लोगों को *त्याग* देता है जो दुष्टता का आविष्कार करते हैं, दुष्टता करते हैं या जीवन में दुष्टता जारी रखने के लिए बढ़ावा देते हैं। वे आगे से और आगे भ्रष्टता और अपराधों में और विशेष रूप से यौन अनैतिकता में डूबते जाते हैं। इस प्रकार के नैतिक भ्रष्टाचार का प्रमाण पुरुषों और महिलाओं दोनों के बीच व्यापक यौन संकीर्णता, सकल समलैंगिकता और परिणामस्वरूप भयानक यौन रोग हैं (रोमियों 1:26-27)। अन्यजाती दुनिया में हर प्रकार की दुष्टता करके साबित करते हैं कि वे

---

[1] उदाहरण के लिए, एक आतंकवादी ऐसे ईश्वर को ढूंढ निकालता है जो "पवित्र युद्धों" की माँग करता है। एक यौन अनैतिक व्यक्ति मानता है कि उसका ईश्वर स्वयं कई देवियों को रखता है या आधिकारिक तौर पर बहुविवाह करता है। एक ईश्वरविहीन व्यक्ति के पास ऐसा ईश्वर होता है जो ऐसे प्रकाशन देता है जो उसके दुष्ट जीवन से मेल रखते हैं। इस प्रकार, वह अवैध रूप से किसी महिला को लेने के लिए, बीमार लोगों को चंगा घोषित करने के लिए, जागृति का वादा करने के लिए, स्वयं को आत्मिक अगुवा (भविष्यवक्ता, प्रेरित, धर्माध्यक्ष), आदि घोषित करने के लिए एक प्रकाशन प्राप्त करता है। भजन 115:8 कहता है, "वे जो मूर्तियाँ बनाते या जो मूर्तियों पर भरोसा करते हैं, अपनी मूर्ति के समान बन जाते हैं!"

पूर्ण रीति से अधर्मी हैं (रोमियों 1:29-31)। *अपने बाहरी व्यवहार में,* अन्यजातियों ने अपनी भयानक भ्रष्टता का प्रदर्शन किया है और कुछ भी ऐसा करने की क्षमता खो दी है जो धार्मिक है!

चरण 3. प्रश्न। व्याख्या

विचार करें। इस पद में से किसी भी चीज के विषय में कौनसा प्रश्न आप इस समूह से पूछना पसंद करेंगे? आइए हम रोमियों 1:18-32 के सभी सत्यों को समझने का प्रयास करें और उन चीजों के विषय में प्रश्न पूछें जिन्हें हम अभी भी नहीं समझते हैं।

अभिलेखित करें। अपने प्रश्न को यथासंभव स्पष्ट रूप से तैयार करें। फिर अपनी स्मरण-पुस्तक में अपना प्रश्न लिखें।

साझा करें। (समूह के सदस्यों को सोचने और लिखने के लिए लगभग दो मिनट मिलने के पश्चात, पहले प्रत्येक व्यक्ति को अपना प्रश्न साझा करने दें।)

चर्चा करें। (फिर, इनमें से कुछ प्रश्नों को चुनें और उन्हें अपने समूह में एक साथ चर्चा करके उत्तर देने का प्रयास करें।) (प्रश्नों के उदाहरण जो छात्र पूछ सकते हैं और प्रश्नों की चर्चा के विषय में कुछ नोट्स निम्नलिखित हैं।)

1:18

प्रश्न 1. **परमेश्वर लोगों से गुस्सा क्यों है?**

ध्यान दें। परमेश्वर न केवल *प्रेम करने वाला* परमेश्वर है, परन्तु *पवित्र और धार्मिकता* का परमेश्वर भी है!

(1) परमेश्वर का क्रोध उसके पवित्र और धार्मिकता के स्वभाव की अभिव्यक्ति है।

परमेश्वर का दण्डात्मक न्याय परमेश्वर के अलौकिक स्वभाव का एक अनिवार्य गुण है। परमेश्वर की पवित्र धार्मिकता पाप का आवश्यक दण्ड प्रदान करती है। यदि परमेश्वर न्याय नहीं करता और दण्ड नहीं देता, तो वह पवित्र और धर्मी नहीं होता! परमेश्वर की पवित्र धार्मिकता मनुष्य को उसके पापों को क्षमा करने के लिए एक विकट प्रायश्चित की आवश्यकता का आधार भी है। यह सिद्धांत पौलुस की *औचित्य की शिक्षा* की व्याख्या का आधार है। "परमेश्वर का क्रोध" लोगों के पाप के विरुद्ध परमेश्वर का धार्मिक और पवित्र क्रोध है और पाप को दंडित करने के लिए उसका धार्मिक संकल्प है। परमेश्वर का क्रोध *स्वर्ग से* प्रकट होता है, क्योंकि वही वह स्थान है जहाँ परमेश्वर रहता है। परमेश्वर का क्रोध कई तरीकों से पाप के वास्तविक दण्ड के द्वारा *प्रकट* या व्यक्त होता है। उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने जलप्रलय के माध्यम से पाप को दंडित किया, सदोम और अमोरा का विनाश और मिस्र में दस विपत्तियाँ (सीएफ. यहेजकेल 14:21)।

(2) परमेश्वर का क्रोध उसकी उचित और न्यायपूर्ण दण्ड की अभिव्यक्ति है।

"ईश्वरविहीनता" का अर्थ बाइबल के परमेश्वर के प्रति गलत या अनुचित रवैया। ष्दुष्टताष का अर्थ है अन्य लोगों के प्रति गलत या अनुचित रवैया। परमेश्वर का क्रोध उन लोगों के विरुद्ध है जो सच्चाई को *दबाते हैं* (दूर करते हैं, अस्वीकार करते हैं) और जो सच का *आदान-प्रदान* करते हैं (झूठ के लिए)! "सत्य" वो है जो कुछ भी सही, पवित्र और सच्चा है, हमारी मानवीय दृष्टि में नहीं, परन्तु परमेश्वर की अलौकिक दृष्टि में। सच्चाई विशेष रूप से धार्मिक और नैतिक सत्य है जिसे परमेश्वर ने बाइबल में प्रकट किया है (यूहन्ना 3:21; 8:32; 17:17; 2 कुरिन्थियों 4:2; 2 थिस्सलुनीकियों 2:12)। बाइबल में परमेश्वर की सच्चाई दुनिया में *एकमात्र सच्चे धर्म* और दुनिया में *एकमात्र सच्ची नैतिकता*

<u>को प्रकट करती है</u>! लोग अपनी दुष्टता के माध्यम से परमेश्वर की सच्चाई को दबाते हैं या बाधा डालते हैं।

लेग सच्चाई को कैसे दबाते हैं? हालाँकि उनके पास पर्याप्त ज्ञान या जागरूकता है कि परमेश्वर एक पवित्र, धर्मी और एक शक्तिशाली परमेश्वर है (रोमियों 1:19-20; 2:14-15), वे स्वयं परमेश्वर के लिए और परमेश्वर के नियमों के प्रति श्रद्धा का अभाव रखते हैं, जो लोगों के जीवन को परमेश्वर और अन्य लोगों के साथ सम्बन्ध में नियंत्रित करता है। वे सच्चाई जानते हैं, परन्तु उसे अपने विचारों, चेतना और व्यावहारिक जीवन से दूर धकेल देते हैं। इसलिए, परमेश्वर लोगों को उसके और उसके कानूनों के प्रति श्रद्धा के अभाव के लिए दंडित करता है।

लोग सच्चाई का आदान-प्रदान कैसे करते हैं? वे न केवल परमेश्वर के सत्य को अपने जीवन से बाहर धकेलते हैं, परन्तु परमेश्वर के सत्य को अपने स्वयं के (दार्शनिक, धार्मिक या वैज्ञानिक) बनाए झूठ के साथ प्रतिस्थापित करते हैं। वे जीवित परमेश्वर को स्वयं तैयार किए या बनाए हुए "ईश्वर" के साथ प्रतिस्थापित करते हैं। गैर-मसीही धर्मों और पंथों के शिक्षक अपने विकृत मानव-निर्मित शिक्षाओं के साथ बाइबल की शिक्षाओं का आदान-प्रदान करते हैं और स्वयं की "पवित्र पुस्तक" का उत्पादन करते हैं। परमेश्वर निश्चित रूप से उन लोगों को दंडित करेगा जो सभी प्रकार के झूठे धर्मों को मानते हैं और अपने झूठ का अभ्यास करते हैं। गैर-मसीही धर्म सत्य नहीं हैं, क्योंकि वे बाइबल की सच्चाई को दबाते हैं और अपने झूठ के लिए इसका आदान-प्रदान करते हैं!

1:19-20

<u>प्रश्न 2.</u> ***<u>परमेश्वर स्वयं को गैर-यहूदियों (अन्यजातियों) पर कैसे प्रकट करता है</u>?***

ध्यान दें।

(1) सभी लोगों को परमेश्वर से एक सामान्य प्रकाशन प्राप्त हुआ है।

बाइबल के परमेश्वर ने कभी भी पृथ्वी पर अपने तर्कसंगत प्राणियों के बीच स्वयं को गवाही के बिना नहीं छोड़ा है। उसने इस विषय में पर्याप्त प्रकाश दिया है कि वह कौन है और सृष्टि में अपने कार्यों के माध्यम से (रोमियों 1:19-20) और लोगों के हृदय पर लिखे गए उसके नैतिक कानूनों के माध्यम से (रोमियों 2:14-15) अपने प्राणियों से क्या माँग करता है। <u>परमेश्वर ने सभी लोगों को परमेश्वर का कुछ ज्ञान रखने की क्षमता के साथ बनाया है</u>। पौलुस यह नहीं कहता कि परमेश्वर के विषय में शायद जो कुछ भी ज्ञात हुआ है वह अन्यजातियों पर प्रकट हुआ था। वह बस इतना कहता है कि अन्यजातियों के पास ईश्वरहीनता और दुष्टता को अक्षम्य करने के लिए बाइबल के परमेश्वर के विषय में पर्याप्त जानकारी है! यह केवल ज्ञान नहीं है कि परमेश्वर का अस्तित्व है (कि एक परमेश्वर है), परन्तु परमेश्वर की प्रकृति और विशेषताओं का ज्ञान, जैसे कि उसकी अनन्त शक्ति, अलौकिकता (रोमियों 1:20) और न्याय (रोमियों 1:32)। बाइबल में दिए अन्य वचनों के अनुसार, अन्यजातियों के पास परमेश्वर के अदृश्य गुणों का ज्ञान है, जैसे कि उसकी अच्छाई, बुद्धि, उसके कार्यों में व्यक्त की गई शक्ति और महिमा है (भजन संहिता 8; भजन संहिता 19; यशायाह 40:21-26; प्रेरितों के काम 14:17; 17:24-27)।

परमेश्वर के विषय में यह ज्ञान उनके लिए सादा या बेहतर बनाया गया था, उन्हें (ग्रीकः एन) <u>में</u> सादा बनाया गया था (रोमियों 1:19)। यह उनके दिमाग <u>में</u> और उनके हृदयों <u>में</u> एक प्रकाशन है। परमेश्वर ने उन्हें अपने स्वरुप में बनाया है ताकि उनका मनुष्य अस्तित्व इस बात का पर्याप्त प्रमाण हो कि परमेश्वर का अस्तित्व है। और उसकी विशेषताएं सिद्ध हैं। मनुष्य अपनी मानवीय भावना के साथ

परमेश्वर की बनाई रचना में उसके प्रगटीकरण को देखने में सक्षम है। परमेश्वर ने स्वयं को बिना गवाह के कभी नहीं छोड़ा। उसका अस्तित्व और सिद्ध विशेषताएँ हमेशा इतनी स्पष्ट रही हैं, कि उसके तर्कसंगत प्राणी उसे सच्चे और एकमात्र परमेश्वर के रूप में स्वीकार करने और उसकी आराधना करने के लिए बाध्य हैं! यही कारण है कि परमेश्वर के तर्कसंगत प्राणी केवल भौतिक प्राणी नहीं हैं, परन्तु आध्यात्मिक और नैतिक प्राणी भी हैं। तर्कसंगत और नैतिक प्राणियों के रूप में, लोगों के पास उनकी ईश्वरहीनता और दुष्टता के लिए कोई बहाना नहीं है (रोमियों 3:19-20)।

हालाँकि, परमेश्वर के विषय में यह ज्ञान दबाया गया और आदान-प्रदान किया गया था (रोमियों 1:18,25)। यद्यपि सभी मनुष्यों में यह जानने की क्षमता है कि परमेश्वर का अस्तित्व है और उसके चरित्र के भाग को भी जानते हैं, वे परमेश्वर को "न तो महिमा देते हैं और न ही धन्यवाद देते हैं" (रोमियों 1:21)। इसमें कोई बहाना नहीं बनाया जा सकता है, क्योंकि लोग अपने सत्य के ज्ञान के अनुसार कार्य नहीं करते हैं! इसके बजाय, वे जानबूझकर और दुष्टता से सच्चाई को दबाते और उसका आदान-प्रदान करते हैं।

परमेश्वर के प्रति उनका पाप (विशेषकर उनकी मूर्तिपूजा) उनकी *अज्ञानता* का परिणाम नहीं है, बल्कि उनकी *स्वेच्छापूर्वक भ्रष्ट ईश्वरविहीनता* का फल है! वे जानते हैं कि परमेश्वर के प्रति क्या सही है (रोमियों 1:32), परन्तु फिर भी वह करते हैं जो परमेश्वर के प्रति गलत है। वे बाइबल के जीवित परमेश्वर की आराधना अपने परमेश्वर के रूप में नहीं करते हैं और वे उसे अपने जीवन और आशीषों के स्रोत के रूप में स्वीकार नहीं करते हैं।

इसी प्रकार लोगों के विरुद्ध उनके पापों के सभी रूप (अपने पूर्ण भ्रष्ट प्रकटीकरणों में यौन अनैतिकता सहित) उनकी *अज्ञानता या तथाकथित अंतर्निहित मानव स्वभाव* [2] का परिणाम नहीं हैं, परन्तु उनकी *स्वैच्छिक भ्रष्टता* का फल है। वे जानते हैं कि परमेश्वर की दृष्टि में सही क्या है (रोमियों 1:32), परन्तु फिर भी अपने पड़ोसी के प्रति वह करते हैं जो गलत है। वे एक-दूसरे के प्रति प्रत्येक प्रकार की दुष्टता करते हैं (रोमियों 1:29-31)।

यहाँ तक कि सबसे अधिक प्रतिशोधी पापी भी अपने भीतर जानता है कि वह सच्चाई को दबाने या झूठ के लिए सच्चाई का आदान-प्रदान करने का दोषी है। वह जानता है कि वह न्यायपूर्वक परमेश्वर के क्रोध के सामने खुला है। रोमियों 1:32 में कहा गया है कि यद्यपि वे तो परमेश्वर की यह विधि *जानते* हैं, कि ऐसे ऐसे काम करने वाले मुत्यु के दण्ड के योग्य हैं, तौभी न केवल आप ही ऐसे काम करते हैं, वरन करने वालों से प्रसन्न भी होते हैं। मनुष्य का विवेक कभी भी पूर्ण रीति से शाँत नहीं हो सकता है!

(2) सभी लोगों को परमेश्वर के विशेष प्रकाशन की आवश्यकता है।

यद्यपि परमेश्वर के सृष्टि के कार्यों में परमेश्वर का प्रकाशन लोगों को परमेश्वर के *न्याय* के संबंध में अक्षम्य प्रदान करने के लिए पर्याप्त है, वह इस बात का पालन नहीं करता है कि यह सामान्य प्रकाशन उन्हें *उद्धार* तक ले जाने के लिए पर्याप्त है। बजाए जाने के लिए, लोगों को परमेश्वर के एक

[2] सभी लोगों के पाप में पतन के पश्चात एक *पापी स्वभाव* है और वे बुराई करने के लिए प्रवृत्त हैं। नए जन्म (2 कुरिन्थियों 5:17) के पश्चात सभी मसीहियों के पास एक *नया स्वभाव* है। मसीहियों को आगे से अपने नश्वर शरीर में पाप को शासन न करने देने के लिए कहा जाता है, ताकि वे उसकी बुरी इच्छाओं का पालन न कर सकें (रोमियों 6:11-14; रोमियों 8:11-14)। एकमात्र अक्षम्य पाप परमेश्वर को प्रतिद्वंद्वी (शैतान) के रूप में मानना (मत्ती 12:31-32) और पाप जारी रखना है (वर्तमान निरंतर काल) (1 यूहन्ना 3:6-8; 5:16-18)।

सामान्य प्रकाशन से अधिक की आवश्यकता है। उन्हें परमेश्वर के एक विशेष प्रकाशन की आवश्यकता है। प्राकृतिक धार्मिक ज्ञान और लोगों की भावनाएं उन्हें कभी नहीं बचा सकती हैं! पूर्ण संसार के लोगों के अनुभव, सभी प्रकार की परिस्थितियों में जिनमें वे रहे हैं, यह साबित करता है कि परमेश्वर का ज्ञान जो उन्होंने प्रकृति में परमेश्वर के कार्यों से प्राप्त किया है और उनके हृदय पर परमेश्वर के नैतिक कानून उन्हें यीशु पर विश्वास करने की ओर नहीं लेकर गए हैं। ज्ञान, जो परमेश्वर के विषय में अन्यजातियों के पास उसके सृष्टि के कार्यों से, उनके हृदयों में और साथ-साथ उनकी अस्पष्ट परंपराओं के माध्यम से है, उन्हें बाइबल के जीवित परमेश्वर की ओर नहीं ले जाता है। यह उन्हें परमेश्वर की आवश्यक धार्मिकता और पवित्रता की ओर भी नहीं ले जाता है। बचाए जाने के लिए, संसार में लोगों को परमेश्वर के एक विशेष प्रकाशन की आवश्यकता है (रोमियों 1:21-23)। वह विशेष प्रकाशन सुसमाचार में दिया गया है (रोमियों 1:17; 3:21)।

1:21-25

प्रश्न 3. ***परमेश्वर लोगों को उनकी पापी इच्छाओं और जीवन के पतित तरीके को क्यों दे देता है?***

ध्यान दें।

(1) परमेश्वर ने धर्म और नैतिकता के बीच एक निश्चित संबंध स्थापित किया है।

ईश्वरविहीनता दुष्टता की ओर ले जाती है। धार्मिक त्रुटि (आध्यात्मिक भ्रष्टाचार) नैतिक भ्रष्टता की ओर ले जाती है। लोग, जो यह स्वीकार नहीं करना चाहते हैं कि बाइबल के जीवित परमेश्वर ने स्वयं के विषय में क्या बताया है, वे परमेश्वर के अपने ज्ञान में अधिक से अधिक भ्रष्ट हो जाएँगे। एक व्यक्ति बाइबल के परमेश्वर से जितना कम संबंध रखता है, वह अपने दिमाग और व्यवहार में, उतना ही अनैतिक और भ्रष्ट हो जाता है। उदाहरण के लिए, जब कोई व्यक्ति परमेश्वर का धन्यवाद नहीं करता या उसकी महिमा नहीं करता है, तो वह अपनी (तर्कसंगत, आध्यात्मिक और वैज्ञानिक) सोच में एक मूर्ख बन जाता है।

जब कोई व्यक्ति झूठे ईश्वर या झूठी (बाइबल के विपरीत) धार्मिक शिक्षाओं पर विश्वास करता है, तो वह एक यौन अनैतिक जीवन जीने लगता है। इसका उल्टा भी सही है। जब कोई व्यक्ति यौन अनैतिकता में जी रहा होता है, तो आप यह मान सकते हैं कि वह शायद झूठी धार्मिक शिक्षाओं में विश्वास करता है। वह या तो उस परमेश्वर में विश्वास नहीं करता है जिसने बाइबल में स्वयं को प्रकट किया है, परन्तु एक झूठे ईश्वर (दूसरे धर्म से) में विश्वास रखता है या स्वयं को ईश्वर के रूप में मानता है। परमेश्वर ने ईश्वरहीनता और यौन अनैतिकता के बीच एक अविभाज्य संबंध स्थापित किया है!

सौभाग्य से, इसके विपरीत भी सच है। एक व्यक्ति जो पश्चाताप करता है और यौन अनैतिकता से दूर हो जाता है, वह फिर से बाइबल में सच्चाई को संजोएगा। एक व्यक्ति जो बाइबल के जीवित परमेश्वर के साथ चलता है, वह बाइबल की सच्चाइयों को पकड़े रहेगा और एक शुद्ध नैतिकता बनाए रखेगा!

(2) परमेश्वर अक्सर पापी को अधिक पाप को सौंपकर मानव पाप को दण्ड देता है।

वह परमेश्वर ठीक ही उस व्यक्ति को त्यागता है जो पाप करने में लगा रहता है, परमेश्वर की पवित्रता के साथ और मनुष्य के अनैतिक कार्य के साथ निरन्तर बने रहता है। परमेश्वर लोगों को बुराई करने या पाप जारी रखने के लिए लुभाता या प्रेरित नहीं करता है (याकूब 1:13)। वह लोगों को उनकी बुराई के लिए त्याग देता है। जब परमेश्वर अपमानजनक यौन अशुद्धता और एक दूसरे के बीच

शर्मनाक अभद्र कार्यों में *लोगों को दे देता है* (1:24,26), तो वह बस उनके बुरे कार्यों को रोकने से हट जाता है। जब परमेश्वर लोगों को एक भ्रष्ट दिमाग को देता है जो केवल प्रत्येक प्रकार की दुष्टता का आविष्कार कर सकता है (रोमियों 1:28-31), *वह बस उन्हें उनके पापों के लिए त्याग देता है*। परमेश्वर उन्हें वह काटने की अनुमति दे देता है जो कुछ उन्होंने स्वयं बोया था (गलातियों 6:7)। और जब इस प्रकार की ईश्वरहीनता और दुष्टता बनी रहती है, तो परमेश्वर न केवल *अपनी दया और अनुग्रह को उनसे दूर रखता है,* बल्कि उनके अविश्वास द्वारा *स्वयं को निरन्तर कठोर करने* और अनाज्ञाकारिता के साथ स्थायी कठोर होने हेतु *वास्तव में दण्ड देता है* (सीएफ. रोमियों 1:18,24-28; 9:18; 11:7-10; यशायाह 6:9-10; मत्ती 13:11-15)।

(3) परमेश्वर पृथ्वी पर ईश्वरहीन और दुष्ट लोगों के साथ अति धैर्य दिखाता है।

परमेश्वर किसी को भी इससे पहले कि उसकी पापपूर्ण इच्छाओं और जीवन के अपमानजनक तरीके को सौंप दे, अति धैर्य दिखाता है। उदाहरण के लिए, कैन के अपने भाई की हत्या करने से पहले, परमेश्वर ने कैन के साथ कोमलता से व्यवहार किया। उसने कैन को वह करने के लिए आमंत्रित किया जो सही था। तब परमेश्वर उसे स्वीकार करेगा (उत्पत्ति 4:6-7)।

जलप्रलय से पहले, परमेश्वर ने इस आशा में लंबे समय तक धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की कि पृथ्वी पर दुष्ट लोग पश्चाताप कर लेंगे और नाश नहीं होंगे (उत्पत्ति 6:5; 1 पतरस 3:20; 2 पतरस 3:9)।

ईजेबेल को परमेश्वर ने दिया, जिसने थियातिरा की कलीसिया में मूर्तिपूजा और यौन अनैतिकता को बढ़ावा दिया, उसके आध्यात्मिक और यौन अनैतिकता से पश्चाताप करने का समय। परन्तु क्योंकि वह और उसके साथी अनिच्छुक थे, परमेश्वर उनके लिए गहन पीड़ा लेकर आए (प्रकाशितवाक्य 2:20-22)।

(4) परमेश्वर नरक में के अनन्त न्याय से बचाने के लिए पृथ्वी पर लोगों पर वर्तमान न्याय लाता है।

इस जीवन में परमेश्वर के वर्तमान न्याय इस दुनिया के अंत में परमेश्वर के अंतिम न्याय से पहले आते हैं। परमेश्वर के वर्तमान न्यायों में कुछ न्याय होने देने की अनुमति होती है, जब लोग आध्यात्मिक और नैतिक कानूनों को तोड़ते हैं जो उसने सृष्टि में बनाए थे। वे जो बोते हैं उसे काटते हैं (गलातियों 6:7-8)। भौतिक विज्ञान में गुरुत्वाकर्षण के नियम के समान, इसलिए आलस्य को बोनेवाला व्यक्ति गरीबी की उपज काटेगा। एक व्यक्ति जो घृणा बोता है, वह टूटे हुए रिश्तों को काटेगा। अत्याचार बोनेवाला आदमी युद्धों को काटेगा। ड्रग्स बोनेवाला व्यक्ति नशे की लत को काटता है।

जब लोग बाइबल के परमेश्वर की ओर अपना मुँह फेरने में लगे रहते हैं, तो परमेश्वर के वर्तमान न्यायों में कुछ विशेष न्याय भी होते हैं। परमेश्वर उनसे अपनी दी गई देखभाल और सुरक्षा वापस ले लेता है और उन पर अपने वर्तमान अस्थायी न्यायों को लाता है। उदाहरण के लिए, उनकी कटाई विफल हो जाती है, युद्ध उनके देश को फाड़ देते हैं, उनके लोगों को बहुत नुकसान होता है और पृथ्वी पर किसी भी चीज से संतुष्टि नहीं होती है, आदि (लैव्यव्यवस्था 26:14-25; आमोस 4:6-12; हाग्गै 1:3-11; मत्ती 24:4-14; प्रकाशितवाक्य 9:20-21; 16:9)। परमेश्वर पृथ्वी पर मनुष्य के इतिहास में मानव जाति को यह दिखाने के लिए कि वह उनके पापों से अप्रसन्न है और उन्हें पश्चाताप करने और उसकी ओर वापस मुड़ने के लिए चेतावनी देने हेतु भूकंप, बाढ़, अकाल, भूख और महामारी जैसी सभी प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं का उपयोग करता आया है (यहेजकेल 14:21)।

परमेश्वर अपने *वर्तमान लौकिक* न्यायों को लोगों पर लाता है ताकि उन्हें अपने *भविष्य के अनन्त*

न्याय (नरकदण्ड) से बचा सके! "जब हमारा प्रभु द्वारा न्याय होता है, तो हमें अनुशासित किया जाता है ताकि हम दुनिया के साथ दोषी न ठहराए जाएँ" (1 कुरिन्थियों 11:32)। परमेश्वर के वर्तमान न्यायों का उद्देश्य लोगों को अनुशासित करना है, अर्थात, लोगों को चेतावनी देना, उनके पापों को उजागर करना, उन्हें उनके पापों के विषय में जागरूक करना, उन्हें उनके पापों के लिए फटकारना और पश्चाताप करने के लिए उनको पुकारना।

परमेश्वर का लक्ष्य वह कार्य करना है जो अब लोगों के लिए सबसे अच्छा है। "जब किसी अपराध के लिए दिया दण्ड जल्दी नहीं होता है, तो लोगों के हृदय गलत करने के लिए योजनाओं से भरे होते हैं" (सभोपदेशक 8:11; सीएफ. व्यवस्थाविवरण 13:11; भजन संहिता 119:126; यशायाह 26:9; आमोस 4:6-12; हाग्गै 1:5-11)। परमेश्वर पश्चाताप करने की चेतावनी के रूप में अपनी न्याय की तुरहियाँ बजाता है (प्रकाशितवाक्य 9:20-21)।

यदि परमेश्वर बिना चुनौती दिए बस उनकी ईश्वरहीनता और दुष्टता को सहन करता रहेगा, तो वे अपने पापों के गुलाम बन जाएँगे और परमेश्वर को इसके फलस्वरूप उन्हें अनन्त मृत्यु (नरक) के साथ दंडित करना पड़ेगा। (प्रकाशितवाक्य 21:8)। परमेश्वर के वर्तमान न्यायों का उद्देश्य लोगों को उनकी ईश्वरहीनता और दुष्टता से मोड़ना है और उनके बजाय परमेश्वर की पवित्रता और धार्मिकता में साझा करना है (इब्रानियों 12:4-13)। परमेश्वर चंगा करने के लिए दण्ड देता है (यशायाह 19:22)। हालाँकि, यदि परमेश्वर के धैर्य का उत्तर पश्चाताप द्वारा नहीं दिया जाता है, तो धार्मिक और पवित्र आक्रोश में परमेश्वर अंततः उन्हें एक ऐसी स्थिति में छोड़ देगा, जिसमें वे परमेश्वर की प्रेममय उपस्थिति और देखभाल से सदा के लिए अलग हो जाते हैं (2 थिस्सलुनीकियों 1:8-9)।

1:26-27

***प्रश्न 4.* बाइबल समलैंगिकता को कैसे देखती है?**

ध्यान दें।

(1) विवाह संबंध।

बाइबल की शादी शिक्षा के अनुसार, संभोग का संबंध एक पुरुष और एक महिला के बीच एक विवाह संबंध के भीतर अभिप्रेत है और किसी अन्य रिश्ते में नहीं (उत्पत्ति 2:24; 1 थिस्सलुनीकियों 4:4-5; इब्रानियों 13:4)! एक आदमी और उसकी पत्नी के बीच ऐसा यौन प्रेम सुन्दर और परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला है (नीतिवचन 5:15-21)। पुरुष और महिला शरीर को परमेश्वर द्वारा अभिकल्पित और बनाया गया है, और विवाह संबंध एक पुरुष और एक महिला के बीच एक रिश्ते के रूप में होना आरम्भ से परमेश्वर का विचार, समन्वय और आशीष है और यह कभी भी मनुष्य या मनुष्य के किसी भी समाज का आविष्कार नहीं है (उत्पत्ति 1:27; 2:24; मत्ती 19:5; इफिसियों 5:31)।

वेश्यावृत्ति, समलैंगिकता, पशुगमन, कौटुम्बिक व्यभिचार, बहुविवाह या बहुपत्नी और व्यभिचार जैसे अवैध यौन संबंध बाइबल में कभी भी स्वीकृत नहीं हैं और इन्हें कभी "विवाह संबंध" नहीं माना गया है। इसके विपरीत, बाइबल यौन के इन अवैध रूपों को अस्वीकार करती है और अपराधियों को गंभीर परिणामों के साथ धमकी देती है (लैव्यव्यवस्था 18:6,20,22,23; लैव्यव्यवस्था 20:10,13,15,19; प्रकाशितवाक्य 21:8)। जब एक पुरुष और एक महिला विवाह करते हैं, तो वे स्वीकार करते हैं कि यह परमेश्वर है (और एक या अन्य सामाजिक संस्था नहीं) जो उन्हें जीवन भर के लिए एकजुट करता है (मत्ती 19:6)। वे परमेश्वर और एक दूसरे के साथ एक-दूसरे के प्रति विश्वासयोग्य होने की वाचा

बाँधते हैं (मलाकी 2:14–15)। परमेश्वर द्वारा यह आवश्यकता है कि सभी संस्कृतियों में और इतिहास में हर समय सभी लोगों को बाइबल के विवाह संबंध का सम्मान करना चाहिए और इस बाइबल के विवाह संबंध के अंदर ही यौनक्रिया को स्थान देना चाहिए। "विवाह सब में आदर की बात समझी जाए, और विवाह का बिछौना निष्कलंक रहेय क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों [3] और पूर्ण यौन अनैतिकता का न्याय करेगा।" [4] (इब्रानियों 13:4)।

(2) समलैंगिक संबंध।

<u>बाइबल किसी व्यक्ति की यौन अभिविन्यास या प्राकृतिक झुकाव या यौन भावनाओं के विषय में बयान नहीं देती है, चाहे वह विषमलैंगिक हो या समलैंगिक। परन्तु बाइबल इस विषय में बात करती है कि कोई व्यक्ति अपनी यौन अभिविन्यास, झुकाव और भावनाओं को कैसे अभिव्यक्ति देता है</u>।

माता–पिता द्वारा शिक्षा और समाज में जो कुछ होता है, उसका पुरुषों और महिलाओं के यौन विकास और पुरुष या महिला होने की उनकी स्वीकृति पर बहुत प्रभाव पड़ता है। बाइबल विभिन्न संभावित कारणों की व्याख्या नहीं करती है कि क्यों कुछ लोगों का मानना है कि वे समलैंगिक या समलिंगी हैं। परन्तु <u>बाइबल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि कोई व्यक्ति अपनी लैंगिकता के साथ क्या कर सकता है या नहीं कर सकता है, अपनी अभिविन्यास या झुकाव के बावजूद</u>!

परमेश्वर ने एक पुरुष और एक महिला के बीच यौन संबंध होने के लिए बनाया है, ताकि पुरुष और महिलाः

- जीवनभर के लिए एकता के रूप में एक–दूसरे से बंधे रहें (उत्पत्ति 2:24)
- यौन संबंध का आनंद लें (श्रेष्ठगीत)
- मानव जाति का पुनः उत्पादन करें (उत्पत्ति 1:28)।

परन्तु परमेश्वर विवाह के सम्बन्ध के अंदर पति और उसकी पत्नी के बीच यौन संबंधों के अलावा प्रत्येक प्रकार के यौन संबंधों को मना करता है। अन्य सभी प्रकार के यौन संबंध परमेश्वर की मंशा और उसकी व्यक्त की गई इच्छा के विपरीत हैं।

पुराने नियम में, परमेश्वर कौटुम्बिक व्यभिचार, व्यभिचार, समलैंगिकता, पशुगमन (लैव्यव्यवस्था 18:6,20,22,23; 20:10,13,15,17), स्वच्छंद संभोग, बेवफाई, बलात्कार, वेश्यावृत्ति (व्यवस्थाविवरण 22:20–30; 23:17; 27:21) और बाल यौन शोषण जैसे यौन पापों की घोर निंदा करता है। परमेश्वर की इच्छा के बाहर "यौन या कामुक प्रेम" (ग्रीकः एरोस) की अभिव्यक्ति "मसीही प्रेम" (ग्रीकः अगापे) नहीं है और इसे "प्रेम" के रूप में नहीं माना जा सकता है। जो लोग यौन प्रेम के इन भावों में लिप्त होते हैं, उन्हें अपनी भ्रष्टता और घिनौनी प्रथाओं का परिणाम भुगतना पड़ेगा (सीएफ. यहेजकेल 16:15–58)। परमेश्वर यौन प्रेम के इन भावों को दण्ड देगा (सीएफ. होशे 2:13; 4:12–14; 8:9)।

नए नियम में, परमेश्वर ऐसे यौन अपराधियों की कड़ी निंदा करता है, जो लोग कामोद्दीपक चीजों में लिप्त रहते हैं, जो लोग व्यभिचार करके अपने विवाह तोड़ते हैं, ऐसे लोग जो पुरुष वेश्या के रूप में दिखते हैं और जो लोग समलैंगिक अपराध करते हैं (रोमियों 1:26–27; 1 कुरिन्थियों 6:9–10; इफिसियों 5:3–5; 1 पतरस 4:3–5)। परमेश्वर किसी व्यक्ति की यौन अभिविन्यास, झुकाव या

---

[3] यूनानीः पोर्नोस, वे लोग जो सभी प्रकार की अवैध यौनक्रिया करते हैं (बाइबल अनुसार विवाह के बाहर भी)

[4] यूनानीः मोइचोस, वे लोग जो बाइबल अनुसार विवाह के भीतर ही नियमों को तोड़ते हैं

भावनाओं के विषय में कोई बयान नहीं देता है, ठीक उसी प्रकार जैसे वह उनके गुस्सा होने, चोरी करने या हत्या करने के प्रति झुकाव के विषय में कोई बयान नहीं देता है (निर्गमन 20:12-17)। संसार में सभी लोगों के पास प्राकृतिक रूप से एक *पापपूर्ण अभिविन्यास,* एक पाप की ओर झुकाव और पापपूर्ण भावनाएँ हैं! सभी लोगों को स्वयं को अपने पुराने पापी स्वभाव को न देने या अपने नश्वर शरीर में पाप को शासन न करने देने के लिए कहा जाता है ताकि वे उसकी बुरी इच्छाओं का पालन न करें (रोमियों 6:12-14; रोमियों 8:11-14; याकूब 1:13-14)। परमेश्वर की सहायता से सभी विश्वासी अपने को अपने झुकाव में देने के इन प्रलोभनों का विरोध कर सकते हैं (1 कुरिन्थियों 10:13)। परमेश्वर उसकी निंदा करता है जब लोग झूठ बोलने, चोरी करने, लालच देने या हत्या करने और वास्तव में उपर्युक्त यौन पाप करने के द्वारा अपने पुराने पापी स्वभाव की अभिव्यक्ति देते हैं। जो लोग स्वयं को यौन अनैतिकता और विकृति के लिए दे देते हैं, वे अनन्त अग्नि का दण्ड भुगतेंगे (यहूदा 1:7; प्रकाशितवाक्य 21:8)। परमेश्वर उन्हें नष्ट कर देगा, जो अपने शरीर को नष्ट करते हैं (1 कुरिन्थियों 3:16-17)।

मसीहियों को मसीही विवाह को "परमेश्वर को प्रसन्न करनेवाला" और "परमेश्वर की दृष्टि में सामान्य" और यौन प्रेम की इन अभिव्यक्तियों को "परमेश्वर के प्रति घृणास्पद" और "परमेश्वर की दृष्टि में असामान्य" मानना चाहिए। मसीहियों को बाइबल की शिक्षाओं/सिद्धांतों को पकड़े रहना चाहिए और उन्हें "मंज-वेदी" से खुले तौर पर बढ़ावा देना चाहिए, परन्तु निजी "अंगीकार" में उनको पासबान वाली देखभाल (निंदा नहीं) देनी चाहिए जो अवैध यौन क्रिया से जूझते हैं और इन यौन क्रियाओं को सार्वजनिक चर्चा का विषय नहीं बनाना चाहिए!

फिर भी, 1कुरिन्थियों 6:11 सिखाता है कि जिसने भी इस प्रकार की यौन क्रियाएँ ("परमेश्वर के उद्देश्य को खोने" के रूप में "पाप") की हैं, उनको बचाया जा सकता है, यदि वह क्षमा (न्यायोचना) के लिए यीशु मसीह की ओर मुड़ जाता है और स्वयं को पवित्र जीवन जीने (पवित्रता) के लिए पवित्र आत्मा के काम को सौंप देता है। परमेश्वर समलैंगिक क्रियाओं की निंदा करता है, परन्तु जिन लोगों ने समलैंगिक क्रियाएँ की हैं, वे भी बच सकते हैं जब वे इन क्रियाओं से यीशु मसीह की ओर मुड़ते हैं। सभी लोगों को, चाहे उनकी कोई भी यौन अभिविन्यास, झुकाव या भावनाएँ हों, बाइबल में प्रकट परमेश्वर की इच्छा को खोजना चाहिए और परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना चाहिए।

1:28-32

प्रश्न 5. परमेश्वर उन लोगों को कैसे दंडित करता है जो जान-बूझकर परमेश्वर के ज्ञान को त्याग देते हैं और बुराई करने वाले लोगों का अनुमोदन करते हैं?

ध्यान दें। परमेश्वर उन्हें एक भ्रष्ट दिमाग को दे देगा, वह करने के लिए आज नहीं किया जाना चाहिए। वे अंततः प्रत्येक प्रकार की दुष्टता और भ्रष्टता से भर जाएँगे। यद्यपि वे जानते हैं कि जो लोग इन चीजों को करते हैं वे (अनन्त) मृत्यु के योग्य हैं, वे न केवल इन चीजों को करना जारी रखते हैं, बल्कि उन लोगों का भी अनुमोदन करते हैं जो उनका अभ्यास करते हैं।

चरण 4. लागू करना **अनुप्रयोग**

विचार करें। इन वचनों में कौनसे सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 1:18-32 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

1. रोमियों 1:18-32 से संभावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

1:18. सच को कभी मत दबाओ! बाइबल सच्चाई सिखाती है (यूहन्ना 17रू17)।

1:19-20. प्रकृति में परमेश्वर कार्यों में उसके अदृश्य गुणों पर ध्यान देने का प्रयास करें।

1:20. जीवित परमेश्वर के विरुद्ध बहाने बनाने का प्रयास कभी मत करें। कोई भी पूर्ण अज्ञानता और इस प्रकार निर्दोषता का अनुरोध नहीं कर सकता है!

1:21. अपनी सभी आशीषों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें और जो कुछ भी आप हैं और करते हैं उसमें परमेश्वर को महिमा दें।

1:23,25. कभी भी झूठ के लिए सच का आदान-प्रदान न करें!

1:23-24. सावधान रहें! झूठा धर्म अनिवार्य रूप से अनैतिक यौन व्यवहार की ओर ले जाता है। और यौन अनैतिकता अनिवार्य रूप से झूठी बातों में विश्वास की ओर ले जाती है!

1:24,26,28. सावधान रहें कि यदि आप अपनी पापी आदतों से पश्चाताप नहीं करते हैं, तो परमेश्वर आपको उन्हीं में दे सकता है।

1:27. सावधान हो जाओ! समलैंगिक अपराध (क्रियाएँ, अभिविन्यास नहीं) भयानक बीमारियों की ओर ले जाते हैं।

1:28. बाइबल से प्राप्त जीवित परमेश्वर के ज्ञान को बनाए रखना बिल्कुल सार्थक है।

1:28-29. ईश्वरहीनता अनिवार्य रूप से दुष्टता के प्रत्येक रूप की ओर ले जाती है।

1:29-31. यह उन चीजों की एक व्यावहारिक सूची है जिन्हें परमेश्वर पापों के रूप में मानते हैं।

1:32. कोई भी उसके अंतःकरण को पूर्ण रीति से चुप नहीं कर सकता!

2. रोमियों 1:18-32 से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मैं स्वीकार करता हूँ कि जब मैं एक गैर-मसीही (या अविश्वासी) था, तो मैं ईश्वरहीन और दुष्ट था। मेरे जीवन में, परमेश्वर के लिए कोई सम्मान नहीं दिखाने और कई प्रकार के बुरे काम करने के उदाहरण थे। मैंने पश्चाताप किया और परमेश्वर की धार्मिकता की ओर मुड़ गया, उसके पश्चात् ही मुझे एहसास हुआ कि मुझमें कोई धार्मिकता नहीं थी, जो परमेश्वर की धार्मिकता की माँग को पूरा कर सके। परमेश्वर की धार्मिकता मुझे दी गई थी जब मैंने विश्वास किया कि यीशु मसीह मेरे पापों के लिए मरा और यह साबित करने के लिए पुनर्जीवित हो गया कि परमेश्वर ने मेरे पापों के प्रायश्चित बलिदान को स्वीकार कर लिया है!

मैं इस बात से पूरा परिचित हूँ कि व्यक्ति के धार्मिक विश्वास और उसके नैतिक जीवन के बीच एक अटूट संबंध है। जो कोई ईश्वरहीन है वह दुष्टता करना आरम्भ कर देगा। जो कोई भी झूठे धर्म में विश्वास करता है, वह अंततः मूर्तिपूजा, हत्या, चोरी, यौन अनैतिकता, झूठ और स्वार्थी इच्छाओं की क्रियाएँ करेगा। इसलिए, लोगों को सुसमाचार की सच्चाई सिखाना मेरे लिए बहुत आवश्यक है, ताकि वे भी सच्चे नैतिक जीवन को जीने में सक्षम हो सकें। मैं इसे मसीही विश्वास (शिक्षा) और मसीही आध्यात्मिक और नैतिक आचरण (नीतिशास्त्र) दोनों में लोगों को सिखाने और प्रशिक्षित करने का अपना उद्देश्य बनाता हूँ। "शिक्षा" बाइबल की सच्चाई है जिस पर मुझे विश्वास करना चाहिए। "नीतिशास्त्र" बाइबल की सच्चाई है जिसे मुझे लागू करना चाहिए।

चरण 5. **प्रतिउत्तर**

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 1:18-32 में सिखाया है। (इस बाईबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(मध्यस्थता)*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन के समूहों में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***(निर्धारित कार्य)*** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह नेता। समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी दें या उन्हें इसे नकल करने दें)।

1. प्रतिबद्धता। चेले बनाने, चर्च बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध रहें।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर " रोमियों 1:18-32" का प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रत्येक दिन **व्यवस्थाविवरण 4, 5, 6 और 7** के आधे अध्याय से एक शांत समय लें। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. याद करना । **(5) राज्य की विजयः दानिय्येल 2:44।**

   रोजाना पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. शिक्षा देना। मत्ती 21:33-39, मरकुस 12:1-12 और लुका 20:9-19 में निहित **"दुष्ट मजदूरों" के दृष्टांत** को तैयार करें। दृष्टान्तों की व्याख्या के लिए छह दिशानिर्देशों का उपयोग करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपने लेख का अद्यपन करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल

करें